International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(II), January - March, 2022, pp.151-154

राजस्थान में पर्यटन का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव

कैलाश चन्द्र मीना*

iLrkouk

संसार में विभिन्न देशों की आर्थिक वृद्वि में पर्यटन क्षेत्र की बहुत बडी भूमिका है। आज पर्यटन बहुत तेजी से आय अर्जन के साधन के रूप में विकसित हो रहा है। इसी कारण से पर्यटन को उद्योग का दर्जा दे दिया गया है। यह एक औजार की भाँति आर्थिक लाभ प्राप्त करने में सहयोग करता है। जैसे– रोजगार के अवसर उलब्ध करवाना। सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों और उच्चतर बाजार स्थगित बनाने में महत्तवपूर्ण योगदान देता है।

राजस्थान में पर्यटन के बढते महत्व को ध्यान में रखते हुये ही राज्य सरकार ने वर्ष 1989 में पर्यटन को उद्योग का दर्जा प्रदान किया । ऐसा करने वाला राजस्थान राज्य देश में प्रथम राज्य था।

देश की सफल घरेलू उत्पाद में पर्यटन का मत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। विदेशी विनियम अर्जन का सबसे बड़ा स्त्रोत पर्यटन ही है। इसी कारण राजस्थान ही अपितु देश की प्रति वर्ष विदेशी विनियम अर्जन में वृद्वि हो रही है। यह पिछडे क्षेत्रों को आपस में जोडकर अर्थव्यस्था को गति प्रदान करने में सहयोंग कर रहे। जैसे–परिवहन, कृषि, होटल, निर्माणी, हथकरद्या, कुटीर–उद्योग इत्यादि पर्यटन अर्थव्यवस्था को चालक के रुप में गति दे रहे है। यह एक प्रभावशाली संचालक की तरह अर्थव्यवस्था की आर्थिक विषमताओं को दूर करने में सहयोग प्रदान कर रहा है।

पर्यटन सामाजिक–आर्थिक क्षेत्रों में विकास करने के साथ–साथ एक देश से दूसरे देशों की सांस्कृतिक–मूल्यों की पहचान,रीति–रिवाजों, परम्पराओं, सामाजिक–संस्कृति, आदि को समझने में सहयोग करता है।

परिकल्पनाएँ

- अध्ययन क्षेत्र में पर्यटकों की संख्या बढ़ने से आर्थिक एवं सामाजिक जीवन स्तर में सुधार होता है।
- राजस्थान की कला, संस्कृति व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विदेशी व धार्मिक स्थल स्वदेशी पर्यटकों को अधिक आकर्षित करती है।

अध्ययन उद्देश्य

- अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन उद्योग के महत्तव को समझना।
- आर्थिक विकास में पर्यटन की भूमिका ज्ञात करना।
- अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन आगम का अध्ययन करना।
- पर्यटन से सबन्धित समस्या व उनके प्रभाव का आंकलन।
- पर्यटन विकास से सम्बन्धित सम्भावनाएँ ज्ञात करना।

* सहायक आचार्य, व्यावसायिक प्रशासन, स्व. राजेश पायलट राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदीकुई, दौसा, राजस्थान।

विधि तंत्र

अध्ययन विषय का वैधानिक, तुलनात्मक, क्रमबद्ध एवं तार्किक विश्लेषण करने के लिए उपयुक्त विभिन्न तकनीकों का उपयोग किया जायेगा, जिसमें प्राथमिक आंकड़ों का संकलन एवं द्वितीय आंकडों का प्रयोग किया जायेगा। द्वितीयक आंकड़े व्यक्तिगत प्रलेखों द्वारा प्राप्त किये जाते हैं। जैसे–भारतीय पर्यटन विकास निगम (ITDC) दिल्ली, राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) जयपुर, ट्यूरिस्ट रिसेप्शन सेन्टर जयपुर, राजस्थान इन्स्टीट्यूट ऑफ ट्यूरिज्म एण्ड ट्रेवल मैनेजमेन्ट जयपुर, राजस्थान राज्य होटल निगम लिमिटेड जयपुर, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय जयपुर, जनगणना विभाग जयपुर, कला एवं संस्कृति विभाग जयपुर, सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशालय जयपुर। अध्ययन क्षेत्र से संबंधित भौगोलिक आकृति व आंकड़ों को प्रदर्शित करने के लिए मानचित्र, रैखीय आलेख आदि प्रदर्शन विधियों का प्रयोग किया गया है।

राजस्थान पर्यटन उद्योग

प्रकृति ने पर्यटन विकास की दृष्टि से राजस्थान को विषमताओं के साथ–साथ विविधता भी प्रदान की है और बर्फ से ढ़के पहाड़ों तथा समुद्र तटों के अलावा वह सब कुछ दिया है, जो देश के अन्य पर्यटन राज्यों में सहजता नहीं है। यहाँ की वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक सम्पन्नता, विशाल प्राकृतिक धरोहर, ऐतिहासिक तथ्यों व बलिदानों से अभिभूत राजस्थान की वीर भूमि अनेक अद्‌भुत और आकर्षक पर्यटक स्थलों को समेटे हुए है।

ऐतिहासिक पर्यटन के अर्न्तगत बहुत से किले, महल, हवेलियॉ, खण्ड़र, दुर्ग, अपने गौरवमयी अतीत की कहानी कहते पर्यटाकों को अपनी ओर आकृष्ट करते है। कभी शासक की शक्ति के पर्याय माने जाने वाले किलों का महत्त्व सुरक्षा के लिहाज से भले ही आज कि विकसित वैज्ञानिक युग में गौण हो गयी है, परन्तु इतिहास की में आज भी ये अपने आप में कम महत्त्व नहीं रखते। यह प्रदेश न केवल शौर्य, साहस औद सौन्दर्य के अद्‌भुत परिदृश्य के कारण बल्कि दुर्लभ अनुपम भिति–चित्रों, उच्च शिल्प कला से विनिर्मित मंदिरों, हवेलियों व मकबरों के सौन्दर्य, वास्तुशिल्पें के कारण भी देशी–विदेशी पर्यटकों के लिए स्वाभाविक आर्कषण का केन्द्र बना हुआ है।

राजस्थान कला एवं संस्कृति का घर है। यहॉ त्यौहारों, पर्वों तथा मेलों की अनूठी सांस्कृतिक परम्परा है। अगर नजदीक से राजस्थान को देखना हो, महसूस करना हो तो मेलों, पर्वों में भाग लेना किसी सुखद अनुभव से कम नहीं होगा।

एडोप्ट ए मोन्यूमेन्ट योजनाः– यह राजस्थान में पर्यटन विकास की महत्वपूर्ण परियोजना है। इसे राज. के सभी पर्यटन स्थलों में लागू किया जाना चाहिए। जो स्मरकों द पर्यटन स्थलों के जीर्णोद्वार के लिए बनायी गयी है।

राज्य में करोड़ों रूपयें के अन्तर्राष्ट्रीय वित्तपोषण है। जिन्हें सामाजिक–आर्थिक विकास से संबंधित कार्यों के लिए व्यय करना था लेकिन यह राशियां पर्याप्त मात्रा में विकास हेतु प्राप्त नहीं होती अपितु बकाया राशि को भी बाद में जारी नहीं किया जाता जिससे विकास कार्यों में बाधा आ रही है।

इसलिए शोधकर्त्ता अध्ययन क्षैत्र में एकता मुल्यों और पर्यटन के सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन कर रहा है। अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि योजना बनाने में स्थानीय समुदाय की भागीदारी बहुतकम है जो पर्यटन से आशावादी होने में विफलता के कारण प्रमुख मुद्दों में से एक है। इस कारण से भी पर्यटन योजना और विकास में स्थानीय समुदाय की भागीदारी का भी मूल्यांकन किया जाता है।

पर्यटन सामाजिक–आर्थिक प्रभाव सीधे रूप से सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही रूप में प्रवाह को प्रभावित करता है।

ग्लेन के अनुसार–"पर्यटन प्रभाव न केवल आर्थिक प्रभाव नौकरियों और करों के सन्दर्भ में बल्कि वे व्यापक रूप से पर्यटन से जुडे लोगों से परे व्यापक और प्रभावशाली वाले क्षेत्र है।

हिग्स के अनुसार – सामाजिक–आर्थिक विकास को व्यक्ति के संसाधन, धन शिक्षा स्तर और शहरीकरण की डिग्री के रूप में परिभाषित किया जाता है।

पर्यटन के सुधार कई प्रत्यक्ष लाभ लाएगा जैसेः–

पर्यटन और आतिथ्य के क्षेत्र में रोजगार के अवसर, निजी उद्यमों का विकास, जीवन स्तर में सुधार, सामाजिक उत्थान और जीवन की बेहतर गुणवत्ता, बेहतर शिक्षा और प्रशिक्षण, टिकाऊ पर्यावरणीय प्रथाऐं, विदेशी मुद्रा आय में वृद्धि इत्यादि।

अप्रत्यक्ष लाभ जैसे –

आधारभूत संरचना विकास–बिजली, पानी, स्वच्छता, सड़कें, अस्पतालों, परिवहन, आदि स्थानीय, उपज के लिए बाजार, आय, गुणक के प्रभाव के कारण आर्थिक उत्थान।

पर्यटन के सामाजिक–प्रभाव

राजस्थान में पर्यटन सामाजिक–आर्थिक पहलू के स्थानीय समुदाय पर निर्भर करता है जिसे स्थानीय समुदायों की सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराओं, रिति–रिवाजों, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है, यह प्रभाव निम्नलिखित है–

- सामाजिक सांस्कृतिक विकास में सहयोग प्रदान करना। पर्यटन आपस में भाई–चारे को बढ़ावा देता है।
- पर्यटन आपस में भाई–चारे को बढ़ावा देता है।
- पर्यटन स्थानीय समुदायों की सामुदायिक गति विधियों को प्रभावित करते है।
- पर्यटन से एक देश से दूसरे देशों में सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराओं की समन्वयता में वृद्धि होती है।
- पर्यटन से स्थानीय एवं विदेशी समुदायों की भाषा, सामाजिक स्थिति, आदि को समझने में सहयोग प्राप्त होता है।
- यह लोगों की पर्यटन विकास में सामुदायिक भागीदारी को सुनिश्चितता प्रदान करता है।
- पर्यटन से देश में सकारात्मक सामाजिक–आर्थिक विकास में योगदान प्राप्त हो रहा है।
- पर्यटन विभिन्न सामाजिक–आर्थिक क्षेत्रों में नयी प्रबंध–व्यवस्था एवं शैक्षिक अनुभव की क्रियाओं के संचालन से होने वाले प्रभाव संपरिचय करवाता है।
- सामाजिक–सांस्कृतिक विकास में सहयोग कर विकासशील उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायक है।
- यह स्थानीय एवं पर्यटन व्यवस्था से जुड़े लोगों के रोजगार को प्रभावित करता है।

पर्यटन के आर्थिक प्रभाव

राजस्थान नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में पर्यटन को आर्थिक वृद्धि करने एवं रोजगार के सृजन का जनक माना जाता है। राजस्थान में पर्यटन के आर्थिक प्रभाव निम्न प्रकार से हैः–

- राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर नागरिकों को रोजगार उपलब्ध करता है।
- आर्थिक वृद्धि एवं विकास दर को तीव्रगति प्रदान करने में
- देशी–एवं विदेशी व्यापार में संतुलन स्थापित करने में सहयोग करता है।
- सर्वाधिक विदेशी मुद्रा अर्जन करने में सहयोग प्रभावित करना है।
- यह देश में आर्थिक विकास एवं आय के साधनों में वृद्धि को प्रभावित करता है।
- पर्यटन एक देश से दूसरे देशों में आपसी कला, संगति, भाषा–वेशभूषा संस्कृति परम्पराओं, लोककलाओं इत्यादि का आदान–प्रदान करता है।
- पर्यटन से सामुदायिक आन्तरिक सम्बंधों में सुदृढ़ता आती है।
- पर्यटन लोगों के विकास एवं उत्तम जीवन स्तर प्राप्त करने में सहयोग करता है।
- यह स्थानीय समुदाय एवं विदेशी के बीच आपसी सम्बंधों को मजबूत करता है, व्यापारिक गतिविधियों को प्रभावित करता है।
- पर्यटन मानवीय व्यवहार को एक–दूसरे को समझने में सहयोग करता है।

सुझाव

- राजस्थान की संस्कृति का स्वरुप अत्यन्त विराट है। यहाँ का गौरवशाली इतिहास, समृद्ध संस्कृति, प्राकृतिक दृश्यावलियाँ, सुरम्य परिवेश एवं मेले, त्योहार, हस्तकलाऐं, आदि पर्यटकों को आकर्षित करते है।
- ऐतिहासिक पर्यटक स्थल संरक्षण के अभाव निरन्तर क्षतिग्रस्त होते जा रहे है। ऐसे में यह जरुरी है कि इनके संरक्षण व जीर्णोद्धार किया जाये।
- राजस्थान में पर्यटन के विकास की काफी संभावनाऐं है यहॉ अब पर्यटन के जो नये–नये रूप सामने आ रहे है जैसे– ग्रामीण, पर्यटन परम्परागत खेल, साहसिक पर्यटन आदि।
- राज्य में पर्यटन विकास के लिए क्षेत्र में विभिन्न पैकेज ट्यूर व सूचना प्रोद्यौगिकी के माध्यम से पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।
- राजस्थान में आधारभूत सुविधाओं का आशानुरूप विकास नहीं हुआ है, इसलिये केन्द्र तथा राज्य सरकारों द्वारा इस संबंध में ठोस उपाय करने चाहिए।
- पर्यटन उद्योग बहुत संवेदनशील माना गया है।इस उद्योग की प्रगति के लिए आन्तरिक शान्ति, संद्भाव व सौहार्द की नितांत आवश्यकता मानी गयी है।
- समाज में तेजी से बढ़ रहे अपराध से पर्यटन स्थलों पर असुरक्षा का माहौल बनता है। अतः यहॉ सुरक्षा पर्यटक सहायता बल को बढावा दिया जाये ।
- पर्यटन विकास के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों के साथ आम जन की भागीदारी आवश्यक है।
- वर्तमान में बढते पर्यटन दबाव के कारण "इको टूरिज्म अर्थात पारिस्थितिकी पर्यटन को प्रदेश में बढावा दिया जाए।
- पर्यटन को वर्तमान उद्योग दर्जा मिल गया है। अतः पर्यटन विकास से इस प्रदेश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के साथ ही वहां मौजूद प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों का समुचित सदुपयोग सम्भव हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. म.प्र के प्रमुख पर्यटन स्थल – डॉ आनंद कुमार पाण्डेय, म.प्र हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
2. पर्यटन मार्केटिंग एवं विकास – डॉ जगमोहन नेमी, राष्ट्रशिला प्रकाशन नई दिल्ली।
3. पर्यटन एवं पर्यटन उत्पाद – डॉ संजय कुमार शर्मा, राष्ट्रशिला प्राकशन दिल्ली।
4. इंटरनेशल टुरिज्म – प्रेमधर कनिष्क पब्लिकेशन नई दिल्ली।
5. व्यास, आर के. (2008): ग्रमीण पर्यटन एवं टिकाऊ विकास, अरंहित पब्लिकेशन, जयपुर।
6. व्यास, राजेश कुमार (2011), "सांस्कृतिक पर्यटन", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
7. शर्मा अतुल, (2012), "पर्यटन भूगोल", इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
8. शर्मा, अतुल (2012), "आर्थिक विकास में पर्यटन का योगदान" इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
9. सक्सेना, हरिमोहन (2014), "राजस्थान का भूगोल" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
10. प्रगति प्रतिवेदन (2015–2016) पर्यटन विभाग, राजस्थान।
11. वार्षिक प्रतिवेदन (2016–2017) पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार।

❖◆❖